❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।

– अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 42, अंक 34 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 जुलाई, 2019 से रविवार 21 जुलाई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में

वेद प्रचार सप्ताहों का करें विधिवत आयोजन

वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार एवं आर्यसमाज के विस्तार हेतु जीवनोपयोगी साहित्य का करें वितरण

वैदिक धर्म के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी-न-किसी कारण से मानव जीवन में उदासी, निराशा और चिंता आदि का प्रवेश स्वाभाविक है। इसीलिए हमरे यहां समय-समय पर पर्व मनाने की परंपरा अति प्राचीन है। क्योंकि पर्व में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को नई शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करती है। श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहराई से चिंतन- मनन कर अपनाने में ही मनुष्य मात्र का कल्याण है।

संसार में व्यक्ति केवल उम्र से बड़ा नहीं होता, बल्कि ज्ञान से बड़ा बनता है। जितना हम जानते जाते हैं उतने ही बड़े होते जाते हैं और ज्ञान के आधार पर ही मानव जीवन में आने वाली समस्याएं-अड़चनें स्वयं छोटी होती जाती हैं। इसलिए जीवन विकास की यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी श्रावणी पर्व, अर्थात् वेद-प्रचार सप्ताहों का सभी महानुभाव अधिकारी अपनी-अपनी आर्य समाजों में विधिवत आयोजन करें।

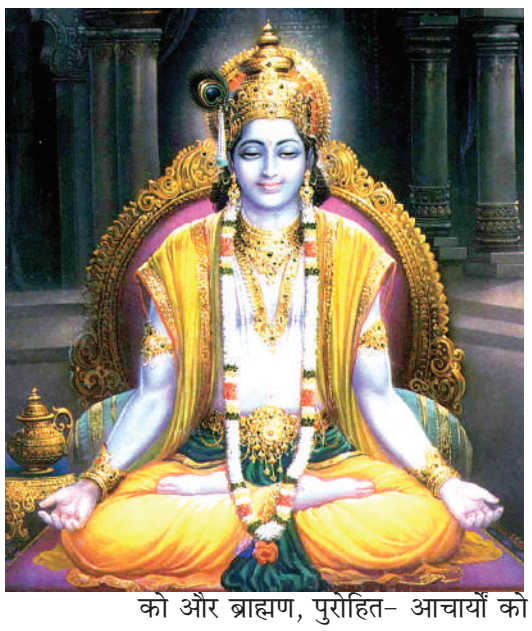

श्रावणी पर्व पर नियमित स्वाध्याय का करें - संकल्प

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित- आचार्यों को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्याय शील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की

- शेष पृष्ठ 5 पर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के शिक्षा सेवा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान

आदिवासी क्षेत्रों में विद्यालय एवं छात्रावासों के नव निर्माण कार्य जोरों पर

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ सदैव वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण एवं सवर्धन के लिए गतिशील है। मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में "महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य विद्या निकेतन", बामनिया में सैकड़ों बच्चे अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इस विद्यालय में छात्रों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए तथा उनके जीवन को सुसंस्कारित करने हेतु एक तीन मंजिला छात्रावास का निर्माण तेजगति से चल रहा है। आने वाले समय में यह छात्रावास उन बच्चों के लिए एक वरदान सिद्ध होगा जो आर्य समाज, महर्षि दयानंद और वेद के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाएंगे।

देश की युवा शक्ति विद्यार्थियों को सुदिशा प्रदान करने हेतु भामल, झाबुआ मध्यप्रदेश के प्रांगण में एक विशाल एवं

- शेष पृष्ठ 5 पर

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं आर्यजनों की ओर से 17वीं लोक सभा में

नव निर्वाचित आर्य सांसदों का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

रविवार 21 जुलाई, 2019 समय : प्रातः 11:00 से 1:00 बजे

यज्ञ : प्रातः 11:00 बजे **अभिनन्दन :** प्रातः 11:30 बजे **प्रीतिभोज :** दोपहर 1:00 बजे

स्थान : आर्य सभागार, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-48

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	महाशय धर्मपाल	सतीश चड्ढा	अरुण प्रकाश वर्मा	जोगेन्द्र खट्टर	नितिञ्जय चौधरी
प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक	व्यवस्थापक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) — आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) — अभिनन्दन समारोह

वेद-स्वाध्याय

दिव्य दर्शनीय महाकाव्य

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। - *अथर्व0 10/8/32*
ऋषिः **कुत्सः**।। देवता - **आत्मा**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - मनुष्य **अन्ति सन्तम्** = सदा समीप ही विद्यमान [परमात्मदेव] को **न जहाति** = कभी त्यागता नहीं, उससे पृथक् नहीं होता और **अन्ति सन्तम्** = समीप ही विद्यमान उसे **न पश्यति**=देखता भी नहीं। हे मनुष्य ! तू **देवस्य** = उस परमात्मदेव के **काव्यम्** = काव्य को **पश्य** = देख, जो काव्य **न ममार** = कभी मरा नहीं, मरता नहीं और जो **न जीर्यति** = कभी जीर्ण नहीं होता, पुराना नहीं होता।

विनय - मनुष्य परमेश्वर को कभी त्याग नहीं सकता, कभी उससे जुदा नहीं हो सकता, क्यों यह परमेश्वर के इतना सन्निकट है, इतना घनिष्ठ सम्बन्ध से जुड़ा है कि परमात्मा उसकी आत्मा की आत्मा है, पर आश्चर्य है कि इतना निकट होता हुआ भी वह अपने परमात्मा को देखता नहीं है। अथवा इसमें आश्चर्य करने की क्या बात है? वह इतना निकट है इसीलिए उसे वह नहीं देख सकता। जब आँख अपनी पुतली को नहीं देख सकती तो अपने को शक्ति देनेवाले परमात्मा को आत्मा कैसे देखे? इसीलिए हे मनुष्य ! यदि तू अपने परमात्मा को आँखों से ही देखना चाहता है तो तू उसके काव्य को देख ! गुणों के देखने से ही गुणी देखा जाता है। तू उसके इस दृश्य महाकाव्य में उसके दर्शन कर। देख उसका यह दृश्यकाव्य हर समय चल रहा है, खेला जा रहा है। इस दृश्य काव्य का पुस्तक वेद है, पर उसका अभिनय यह सब चलता हुआ दृश्यमान संसार है। मनुष्यकृत नाटक को एक-दो बार देख लेने पर वह पुराना हो जाता है और वह समाप्त तो हो ही जाता है, परन्तु यह ईश्वरीय काव्य न तो कभी समाप्त होता है और न कभी पुराना होता है, न कभी मरता है और न कभी जीर्ण होता है, क्योंकि इसका रचयिता भी न कभी मरनेवाला है और न कभी बूढ़ा होनेवाला है। उससे निरन्तर नित्य नया निकलता हुआ यह काव्य सदा चल रहा है। हे मनुष्य ! तू सदा इसको देखता हुआ इसी में अपने परमात्मदेव का हर घड़ी और हर पल दर्शन किया कर।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हाल ही में घटित प्रेम विवाह प्रलाप पर आधारित टिप्पणी

शादी, साजिश और सियासत

अभी तक यही सुना जाता था कि विवाह करना किन्ही दो व्यक्तियों का नितांत व्यक्तिगत मामला है। किन्तु बरेली जिले की बिथरी चौनपुर सीट से विधायक राजेश मिश्रा उर्फ पप्पू भरतौल की बेटी साक्षी ने एक युवक अजितेश कुमार के साथ विवाह कर लिया है। यह मुद्दा जरुर राष्ट्रीय बन गया है। कारण विवाह के बाद साक्षी ने एक वीडियो बनाई, सोशल मीडिया पर साझा की जिसमें वह कह रही है कि मेरा पति अजितेश दलित वर्ग से आता है। इस कारण उसके बाप और भाई ने उसके पीछे गुंडे लगा दिए हैं। जो उन्हें जान से मारना चाहते हैं। इसलिए उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए। इसके बाद इलाहाबाद कोर्ट में पेशी के दौरान अजितेश पर कथित तौर पर हमला होना इससे पता नहीं चल पा रहा है कि इस मामले में साजिश कितनी और सियासत कितनी है।

देश में अंतरजातीय विवाह पहली बार तो हुआ नहीं है। आखिर साक्षी के मामले में इतना रस, इतना स्वाद, इतना शोर क्यों? जहाँ इस मामले में चर्चा का विषय यह होना चाहिए था कि घर से भागकर विवाह करना कितना उचित और अनुचित है? वहां इस मामले को इतना विकृत कर दिया है कि बिना कोई बात सुने ही विधायक पिता को एक जातिवादी विलेन बना दिया गया और मामले को मीडिया की तरफ से किसी छुपे एजेंडे की तरह जातिवाद का रंग देकर उछाल दिया गया। आखिर इसे बार-बार प्रेम विवाह कहा जाना कहाँ तक उचित है?

असल में अपने मन मुताबिक विवाह को प्रेम विवाह भी कहा जाता है। हम इसका विरोध नहीं करते। बशर्ते इसमें विश्वास हो, दोनों में रिश्तों की समझ और गुजर बसर करने हेतु आर्थिक क्षमता भी हो। प्रश्न यह नहीं है कि आप किस तरह से विवाह करते हैं। अपनी मर्जी से करते हैं या परिवार की मर्जी से! प्रश्न यह है कि आप अपने वैवाहिक जीवन को चलाते कैसे हैं? क्योंकि तलाक मांगने वालों में सबसे ज्यादा मामले प्रेम विवाह यानि अपनी पसंद से विवाह करने वालों के हैं। आप महिला थाने में जाकर देखिये, पता कीजिए तलाक के कुल मामलों में साठ प्रतिशत से अधिक कथित प्रेम विवाह करने वाले लोगों के हैं। क्योंकि वास्तविकता के धरातल पर प्रेम विवाह में प्रेम का कहीं से कहीं तक स्थान नजर इसलिए नहीं आता, क्योंकि चार दिन के जज्बाती जुनून के सामने रोजी-रोटी का सवाल जब आ खड़ा होता है या जिंदगी में जब वास्तविक समस्याएं सामने आने लगती हैं, तब इन समस्याओं का जिम्मेदार दोनों एक दूसरे को ठहराने में लग जाते हैं, कई मामलों में तो अति हो जाती है यानि मामले हिंसा या हत्या तक भी पहुँच जाते हैं।

बेशक आज साक्षी और अजितेश के मामले में बहस चल रही हो, इनके पक्ष विपक्ष में लोग खड़े भी हों। लेकिन रिश्तों की दुनिया एक दो दिन के प्रेम से नहीं चलती यह आजीवन प्रेम से चलती है। प्रेम विवाह के उपरांत भी किया जा सकता है किन्तु फिल्मों के जरिये जो एक नई आधुनिकता को जन्म दिया गया यह उसी का परिणाम है कि पहले प्रेम किया जाये बाद में विवाह। यही इस नई परम्परा की असफलता का कारण है क्योंकि विवाह से पहले प्रेमी युगल सपनों की अपनी ही आभासी दुनिया में जीते हैं। जहाँ उनका अपना बड़ा घर होता है, उनके सपने उनकी खुशी एक दूसरे के प्रति समर्पण होता है। किन्तु विवाह के बाद जब व्यावहारिक, सामाजिक दुनिया से उनका आमना-सामना होता है तब वहां समस्याएँ आना स्वाभाविक है। जो लोग इन वास्तविकताओं को झेल जाते हैं, वह सफल रहते हैं। वरना आप देखिये कि आम लोगों के अलावा डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक आदि अपने रिश्तों का फैसला करने के लिए कोर्ट कचहरी में चक्कर लगा रहे हैं।

दूसरा क्या मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान ये केवल शब्द भर हैं क्योंकि इन शब्दों के सहारे ही परिवार समाज में जीते हैं, आगे बढ़ते हैं। प्रतिष्ठा एक दिन में नहीं मिलती, बहुत कुछ देकर समाज में सम्मान हासिल किया जाता है। इसमें परिवार के

.....घर से बिना बताये निकल जाना एक बार पीछे मुड़कर यह भी नहीं देखना कि परिवार की हालत क्या होगी। वह कल सुबह जब उससे कोई पूछेगा तो वह क्या जवाब देगा? उनके मन में बहुत कुछ टूटता-बिखरता जब किसी एक की गलती का खामियाजा कई-कई पीढ़ियां झेलती हैं। सोचना चाहिए कि हमारी जिंदगी और कितनी जिंदगियों से जुड़ी है, उनके प्रति हम कौन सी जिम्मेदारी निभा रहे हैं, केवल अपने व्यक्तिगत सुख पाने की यह कौन सी लालसा है .....

सभी लोगों की जवाबदेही होती है कि अपने पारिवारिक मूल्यों, नियमों और आदर्शों की परंपरा पर चले। हम प्रेम का विरोध नहीं कर रहे हैं। रिश्तों की जीवन रेखा का सबसे मजबूत स्तम्भ ही प्रेम है। किन्तु आधुनिकता के नाम पर आज प्रेम का एक नया अर्थ खड़ा किया जा रहा है कि माता-पिता, भाई-बहन व अन्य परिवार के लोगों को धता बताकर विवाह करने वाले लोगों को प्रेमी युगल या प्रेमी जोड़े कहा जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि प्रेम न करो, विवाह मत करो। हम किसी जाति के जीवन साथी का भी विरोध नहीं करते। किन्तु घर से बिना बताये निकल जाना, एक बार पीछे मुड़कर यह भी नहीं देखना कि परिवार की हालत क्या होगी। वह कल सुबह जब उससे कोई पूछेगा तो वह क्या जवाब देगा? उनके मन में बहुत कुछ टूटता-बिखरता जब किसी एक की गलती का खामियाजा कई-कई पीढ़ियां झेलती हैं। सोचना चाहिए कि हमारी जिंदगी और कितनी जिंदगियों से जुड़ी है, उनके प्रति हम कौन सी जिम्मेदारी निभा रहे हैं, केवल अपने व्यक्तिगत सुख पाने की यह कौन सी लालसा है कि पीछे परिवार सिसक रहा है।

ऐसा नहीं है कि घर परिवार से दूर भागकर आज हर एक लड़की दुखी है लेकिन जिन-जिन लड़कियों ने ऐसा किया उनके परिवार जरुर दुखी हैं। हो सकता है आज विधायक साहब का भी परिवार दुखी हो या हो सकता है विधायक साहब ने बेटी पर पैसे खूब लुटाए हों। पर आज वीडियो देखकर लग रहा है कि वे बेटी को संस्कारों का धन देने में पीछे रह गए। क्योंकि परिवार में संवाद का अभाव, प्रतिष्ठा के नाम पर अभिमान का अतिरेक फिल्मी दुनिया के सुनहरे छलावे, अच्छा-बुरा समझाने की क्षमता का अभाव, उन्हें आधुनिक बनाने की होड़ में कई बार ऐसे ही परिणाम सामने आते हैं। हालाँकि सभी जगह कारण अलग-अलग हो सकते हैं पर हर पीड़ित परिवार की कहानी लगभग एक सी ही है। इस पर एक नये सिरे से चर्चा जरुर होनी चाहिए कि युवक युवती के चार दिन के प्रेम के सामने आखिर बीस से पच्चीस वर्ष का पारिवारिक प्रेम बौना क्यों पड़ता जा रहा है?

- सम्पादक

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

क्या उपनाम ही असली पहचान है?

क या नाम के बाद उपनाम यानि सरनेम जरुरी है, क्या उपनाम ही हमारा असली परिचय होता है जो हमारी जाति धर्म समूह समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है? यानि सामने वाला आसानी से समझ जाये कि उक्त उपनाम का व्यक्ति इस जाति समूह या समुदाय से सम्बन्ध रखता है तथा उपनाम के अनुसार ही उसके साथ व्यवहार और शिष्टाचार किया जाये। दरअसल ये सवाल इस वजह से निकलकर आये कि हाल ही में हरियाणा के जींद की एक खाप पंचायत ने ऐलान किया है कि उनकी पंचायत के अंतर्गत आने वाले 24 गांव के लोग अब जाति- धर्म भूलकर अपने नाम के पीछे अपनी जाति नहीं बल्कि गांव का नाम लगाएंगे ताकि जाति और धर्म का भेदभाव कम हो।

हालाँकि भारत में अनगिनत उपनाम है, जातियों के उपनाम है, इसके बाद उपजातियों के उपनाम है। एक किस्म से कहे तो उपनामों, का एक विशाल समंदर है। किन्तु ये उपनाम आये कहाँ से? क्योंकि उपनामों के संदर्भ में भारतीय इतिहास उठाकर देखें तो रामायण काल में राजा दशरथ, राम, लक्ष्मण, रावण विभीषण को ले लिया जाये अथवा महाभारत के समय राजा महाराजाओं के नामों के साथ उपनाम नहीं थे। धृतराष्ट्र, भीष्म, दुर्योधन, दुशासन अश्वत्थामा या युयुत्सु, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, योगेश्वर श्रीकृष्ण या कंस कोई भी गोत्र या उपनाम का प्रयोग नहीं करता था। इसके उपरांत महाभारत कालखंड से आगे चलकर देखें बिंबसार, अजातशत्रु, उदयन, निपुंजय, सुनिक, महापद्म, आदि के बाद नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद तक उपनाम का प्रयोग कहीं दिखाई नहीं देता। किन्तु घनानंद के पश्चात चन्द्रगुप्त आया और मौर्य उपनाम शुरू हुआ। यदि सम्राट अशोक को छोड़ दिया जाये तो राजाओं में वंश का नाम उपनाम की भाँति प्रयोग आरंभ हो गया था, जिसका प्रयोग मुगल शासन से पहले के राजाओं तक में देखने को मिलता है।

.....भारत में नामों का बहुत होचपोच मामला है। बहुत से गोत्र तो उपनाम बने बैठे हैं और बहुत से उपनामों को गोत्र माना जाता है। अब जैसे भारद्वाज नाम भी है, उपनाम भी है और गोत्र भी। जहाँ तक सवाल गोत्र का है तो भारद्वाज गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और दलितों चारों में लगता है। जिस किसी का भी भारद्वाज गौत्र है तो यह माना जाता है कि वह सभी ऋषि भारद्वाज की संतानें हैं। अब आप ही सोचें उनकी संतानें चारों वर्ण से हैं।.....

देखा जाये मुगलकालीन क्षत्रिय राजाओं ने अपने नाम के साथ उपनाम का प्रयोग आरंभ कर दिया था जैसे मानसिंह, महाराणा प्रताप, जयमल सिंह राठौड़, गुरू गोविन्द सिंह आदि किन्तु सामान्य तौर पर उपनाम प्रयोग नहीं होता था। जैसे मीरा, कबीर, तुलसीदास या रैदास इनमें कोई भी उपनाम का प्रयोग नहीं करता था। यानि बाद में ये चलन बढ़ा। एक समय राव, रावल, महारावल, राणा, राजराणा और महाराणा जैसी उपाधियाँ हुआ करती थीं लेकिन आज यह उपनाम के तौर पर देखी जा सकती हैं। जैसे शास्त्र पढ़ने वालों को शास्त्री, सभी शास्त्रों के शिक्षक को आचार्य, दो वेदों के ज्ञाता को द्विवेदी, चार के ज्ञाता चतुर्वेदी कहलाते थे। उपाध्याय, महामहोपाध्याय उपाधियाँ भी शास्त्रों के अध्ययन आधारित होती थी लेकिन आज ये भी उपनाम बन गये।

अंग्रेजों के शासन के दौरान बहुत सी उपाधियाँ निर्मित हुई, जैसे मांडलिक, जमींदार, मुखिया, राय, रायबहादुर, चौधरी, देशमुख, चीटनीस और पटेल आदि आज यह भी सब उपनाम के रूप में देखी जा सकती हैं। भारत में नामों का बहुत होचपोच मामला है। बहुत से गोत्र तो उपनाम बने बैठे हैं और बहुत से उपनामों को गोत्र माना जाता है। अब जैसे भारद्वाज नाम भी है, उपनाम भी है और गोत्र भी। जहाँ तक सवाल गोत्र का है तो भारद्वाज गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और दलितों चारों में लगता है। जिस किसी का भी भारद्वाज गौत्र है तो यह माना जाता है कि वह सभी ऋषि भारद्वाज की संतानें हैं। अब आप ही सोचें उनकी संतानें चारों वर्ण से हैं।

पिछले कुछ साल पहले भारतीय समाज में उपनाम का महत्त्व जानने के लिए हमने एक प्रयोग किया था। हम अलग लोगों से अलग-अलग उपनामों के साथ मिले तो हमने पाया कि हर एक उपनाम पर समाज में अलग व्यवहार देखने को मिला। इससे यह समझा जा सकता है चाहे कोई नाम रख लो किन्तु उपनाम ही सच्चा प्रहरी है यह बताने के लिए कि अमुक व्यक्ति जन्म से ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, वैश्य अथवा शुद्र है। यानि कर्मणा व्यवस्था की बजाय लोग उपनाम रूपी जन्मना जाति से चिपके हुए हैं। यदि इन उपनामों पर शोध करने लगे तो कई ऐसे उपनाम हैं जो हिंदू समाज के चारों वर्णों में एक जैसे पाए जाते हैं। दरअसल भारतीय उपनाम के पीछे कोई विज्ञान नहीं है यह ऋषियों के नाम के आधार पर निर्मित हुए हैं। ऋषि-मुनियों के ही नाम गोत्र भी बन गए। कालान्तर में जैसे-जैसे राजा- महापुरुष बढ़े समाज बढ़ा साथ ही उपनाम भी बढ़ते गए। कहीं-कहीं स्थानों के पिता और दादा के नाम पर भी उपनाम देखने को मिलते हैं। जबकि समस्त भारतीय एक ही कुनबे के हैं, लेकिन समय सब कुछ बदलकर रख देता है जाति भी धर्म और कर्म भी।

इस कारण आज जो जींद की एक खाप पंचायत ने ऐलान किया है वह बहुत सराहनीय कार्य है। किन्तु इसमें आने वाली पीढ़ी उपनाम के स्थान पर लगे गाँव के नाम को ही गोत्र न मानने लग जाये। इससे बेहतर यही है कि यदि समाज में उपनाम की दूरी पाटनी ही है और उपनाम ही इन्सान की असली पहचान से देखा जाता है तो क्यों न सभी लोग अपने नाम के पीछे आर्य लगायें शायद इससे प्राचीन सभ्यता जीवित हो उठे।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

जीवन परिवर्तन की एक कहानी

आचार्य नरदेवजी वेदतीर्थ ज्वालापुर महाविद्यालय वाले एक तपस्वी विद्वान् तथा स्वतन्त्राता सेनानी थे। इस बाल ब्रह्मचारी विद्वान् के पूज्य पिता पण्डित श्री श्रीनिवासरावजी महाराष्ट्र के एक प्रतिष्ठित सज्जन थे, जो लोकमान्य तिलक के मित्र थे और आर्यसमाज के एक पुरुषार्थी सेवक थे। आपने 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू साप्ताहिक में अपने एक लेख में अपने जीवन-परिवर्तन की रोचक कहानी लिखी थी। आचार्य नरदेवजी ने अपनी 'आपबीती जग बीती' आत्मकथा में तथा अपनी एक अन्य पुस्तक में अपने पिताजी के आर्यसमाजी बनने की जो कहानी दी है, हमने उन्हीं के आधार पर यह घटना अपनी पुस्तक रक्तसाक्षी पं. लेखराम में दी है। आचार्यजी का वृत्तान्त आंशिक सत्य है, पूरी व प्रामाणिक घटना उनके पिताजी के अपने लेख के आधार पर हम यहाँ देते हैं।

पूना के विख्यात मराठी साहित्यकार व लोकमान्य तिलक के गुरु श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ऋषि दयानन्द के घोर विरोधी थे। श्रीनिवासरावजी इन शास्त्रीजी के बड़े प्रशंसक थे। आप उन्हें एक सत्पुरुष जानते व मानते थे। आपने उनके द्वारा लिखित निबन्धमाला का गीता के तुल्य कई बार पाठ किया। विष्णुशास्त्रीजी के प्रभाव में आप ऋषि दयानन्दजी को असत्यपुरुष तथा हिन्दूधर्म को डुबानेवाला समझते थे। श्रीनिवासरावजी के मित्र महाशय गोविन्दसिंहजी ने इन्हें ऋषि की पुस्तकें पढ़ने को दीं, परन्तु ये सब इनके पास वैसे ही पड़ी रहीं। उन्हें हाथ भी न लगाया। - *क्रमशः*

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत

देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु

प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

तथाकथित गुरुओं की कृपा पर व्यंग्यात्मक प्रेरक लेख

किरपा बरसेगी

– डॉ० पूर्ण सिंह डबास

काम धंधे की तलाश में आदमी पता नहीं क्या-क्या पापड़ बेलता है। मैंने पापड़ ही नहीं मोटे-मोटे रोट तक बेल दिए लेकिन कुछ नहीं बना। इस देश में जब कुछ भी नहीं मिले तो बाबाओं की शरण में जाने का रिवाज है जिनमें एक से एक घुटे हुए प्रपंची और तिकड़म शिरोमणि मौजूद हैं। मैं भी एक ऐसे ही बाबा के पास अपनी कष्ट कहानी लेकर पहुँच गया और उसकी सेवा में मौखिक रूप से कोटि-कोटि प्रणाम पेश किए। मौखिक रूप से इसलिए कि मुझे कोटि या करोड़ तक की तो गिनती भी नहीं आती और मेरी नाजुक कमर पाँच-दस बार झुककर प्रणाम करने में ही टें बोल जाती है।

राज-सिंहासन जैसे आसन पर पसरे हुए बाबा शिरोमणि ने मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि की सर्च लाइट फेंकते हुए मेरा कष्ट पूछा और फिर हवा में हाथ लहराते हुए बोले : 'कभी गधे की सवारी की है'? मेरे ना बोलने पर, उन्होंने अपने कमल-मुख को कुछ बिचकाते हुए मुझे कहा 'जाओ एक किलोमीटर तक गधे की सवारी करो किरपा बरसेगी और सब कष्ट दूर हो जाएंगे'।

बड़ी समस्या थी, गधा कहाँ से लाऊँ? हालांकि मेरी बस्ती के घरों में ही अनेक गधों का वास है लेकिन वे सवारी की दृष्टि से किसी काम के नहीं हैं। मोटर कम्पनी वाले भी नए-नए मॉडलों की कारों का 'टेस्ट ड्राइव' करवाकर कारसवारी की सुविधा दे रहे हैं, कई जगह घुड़सवारी या हॉर्स राइडिंग का इंतजाम भी है, लेकिन पूरे शहर में मुझे गधसवारी की सुविधा कहीं नहीं मिली। किसी से गधसवारी के इस पवित्र अनुष्ठान की चर्चा करने में भी संकोच होता था। सवारी तो जरूर करनी थी क्योंकि कष्ट-निवारण का सवाल था, लेकिन छिप कर करनी थी। खुले आम करने पर पता नहीं लोगों में क्या संदेश जाता। शायद वे सोचते कि यह भी गधे का ही भाई-बंधु लगता है।

पर्यावरण को लेकर कई बार मित्रों से चर्चा करता था कि शहर से चिड़िया (गोरैया) गायब हो गई हैं। ऐसी ही चर्चा का सहारा लेते हुए मैंने पार्क में टहलते हुए एक मित्र से कहा-अरे पक्षियों की बात छोड़ो, आजकल तो गधे तक दिखाई नहीं देते! वह बोला हाँ, अब शहर वालों को ऐसे जानवरों की जरूरत भी तो नहीं रही। उस दुष्ट को क्या पता कि मुझे इस समय एक अदद गधे की अर्जेन्ट रूप से जरूरत है। बात को जारी रखते हुए उसने फरमाया कि आजकल तो सिर्फ जमना नदी के धोबी घाट पर ही गधे दिखाई देते हैं क्योंकि धोबी लोग प्राय: गधों पर लादकर धोने के लिए कपड़े लाते-ले जाते हैं।

बस मुझे गधा-प्राप्ति का यह सुराग मिलना था कि इस गर्दभ चर्चा से मन एक दम उखड़ गया। मैंने कहा-भाई साहब मैं तो भूल ही गया था कि किसी को मुझसे मिलने आना है, बस अब चलूंगा। वहाँ से छुट्टी पाकर, मैं गर्दभ सवारी की कामना लिए यमुना तट की तरफ रवाना हो लिया। पूछताछ करता हुआ यमुना नदी पर बने सबसे पुराने पुल के पास पहुँच गया। दो रुपये का सिक्का नदी में फेंककर यमुना माई को मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना की- 'हे यमुना माई मेरी गर्दभ सवारी की मनोकामना आज जरूर पूरी कर देना। इधर-उधर देखा तो कपड़े धोते हुए कई धोबी दिखाई दे गए। मन खुश हो यगा। धोबियों को देखकर ऐसी खुशी जीवन में पहले कभी नहीं हुई थी। एक धोबी के पास जाकर पूछा :

– भाई साहब, गधे नहीं दिखाई दे रहे।

– मुझे तो चारों तरफ दिखाई दे रहे हैं। आपको न दिखें तो मैं क्या कर सकता हूँ।

– मेरा मतलब दो पाँव वालों से नहीं चार पाँव वालों से है।

– दो पाँव वालों का ही पेट नहीं भरा जाता, चार पाँवों वालों का कौन भरेगा? फिर रखेंगे कहाँ? एक कमरे के मकान में उसे बांध लिया तो हम कहाँ जाएंगो? नगर निगम से गधा-पालन की इजाजत कौन दिलवाएगा? और अगर गधे ने अपने मधुर स्वर में आलाप ले लिया तो मुहल्ले वालों से कौन निपटेगा? घास कहाँ से लाएंगे? चारा खाकर नेताओं तक का पेट नहीं भरता फिर गधे का कैसे भरेगा? भर भी गया तो लीद कौन उठाएगा? उठा ली तो फेंकेंगे कहाँ?

उस धोबी राज ने सवालों की इतनी गोलियाँ दागी कि मैं गिरते-गिरते बचा लेकिन अपना काम निकालना था, सो प्यार से बोला-

– लेकिन, बंधु कपड़े तो लादकर लाते ही होंगे?

-आजकल गधे पर कौन लादता है? कोई साइकिल पर लाता है, कोई ऑटो रिक्शा में।

– दरअसल मुझे आधे घंटे के लिए एक गधा चाहिए था। आप ही बताओ, क्या करूँ?

– आप गधे का क्या करोगे?

– एक किलोमीटर तक सवारी करनी है।

यह सुनकर वह हक्का-बक्का-सा रह गया। आश्चर्य से बोला-

-आपके गले में जूतों का हार भी नहीं है, मुँह पर कालिख भी नहीं पुती है! बीस-तीस आदमियों का जूलूस भी आपके साथ नहीं है। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि फिर भी आप गधे की सवारी करने पर क्यों उतारू हैं!

-ऐसी बात नहीं है। मेरे संकट-हरण के उपाय के रूप में एक बाबा ने यह अनुष्ठान बताया है।

– मैं तो बीस साल तक गधे पर टंगा रहा, मेरा तो कोई संकट कटा नहीं!

मेरा और धोबी का यह संवाद राम-केवट संवाद से भी बड़ा होने लगा था। मैंने यमुना मैया से प्रार्थना की – 'हे मैया! इस धोबीराज को सद्बुद्धि दे कि यह मेरे लिए सिर्फ आधे घंटे के लिए एक गधे का जुगाड़ कर दे। पता नहीं उसे यमुना मैया ने प्रेरित किया या उसे स्वयं ही मुझ पर दया आ गई। बोला- 'पुल पार चले जाओ। वहाँ एक धोबी के पास दो गधे हैं। वह पास के एक गाँव से आता है'। मैंने पुल पार किया और उस धोबी से विनम्र निवेदन किया: 'बंधु, लम्बी बात में क्या रखा है, सार यह है कि मुझे एक किलोमीटर की गधा-सवारी करवा दे'। लेकिन इतनी संक्षिप्त चर्चा से वह कहाँ संतुष्ट होने वाला था! उसने भी मेरा विस्तृत इंटरव्यू लिया। मैंने सुन रखा था कि अपना काम निकालने के लिए गधे को भी बाप बनाना पड़ता है लेकिन मुझे तो गधे से पहले धोबी को भी बनाना पड़ा। खैर, वह थोड़ा हँसा और बोला – 'एक हजार रुपये लगेंगे आप की गधा-सवारी निर्विघ्न सम्पन्न हो जाएगी। मैं चौंका और बोला-

– एक हजार रुपये तो बहुत ज्यादा हैं! एक किलो मीटर के लिए इतनी रकम तो अच्छी से अच्छी कार भी नहीं लेती।

– तो कार ले लो, मैंने तो आपको बुलाया नहीं।

– मैंने चुप चाप उसके हाथ में एक हजार रुपये पकड़ा दिए।

मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई कि मेरे इस गधारोहण को कहीं कोई परिचित न देख ले। हालांकि यह स्थान मेरी बस्ती से काफी दूर है, लेकिन आदमी का क्या भरोसा, पता नहीं किस्मत का मारा कौन-कहाँ पहुँच जाए। मैं बड़ा चौकन्ना होकर गधे पर बैठा था और उसके गले की रस्सी पकड़ कर वह धोबी आगे-आगे चल रहा था। मेरे चौकन्ना होने के दो

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री सुरेशचन्द्र आर्य पुन: प्रधान एवं हंसमुख परमार मन्त्री निर्वाचित

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 7 जुलाई, 2019 को आर्यसमाज कांकरिया (अहमदाबाद) में सम्पन्न हुआ। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में सर्वसम्मति से **श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी** को पुन: प्रधान एवं श्री हंसमुख परमार जी को पुन: मन्त्री निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **कोषाध्यक्ष** के रूप में श्री राजेश पारेख को निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी
प्रधान

श्री हंसमुख परमार जी
मन्त्री

श्री राजेश पारेख जी
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री दीनदयाल गुप्ता जी पुन: प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 7 जुलाई, 2019 को आर्यसमाज बड़ा बाजार कोलकाता में सम्पन्न हुआ। श्री विनय आर्य जी निर्वाचन अधिकारी चुनाव प्रक्रिया को सम्पन्न कराया। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में सर्वसम्मति से **श्री दीनदयाल गुप्ता जी** को पुन: प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **श्री उदय सरकार को मन्त्री** एवं **श्री आशीष मंडल को कोषाध्यक्ष** के रूप में निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री दीनदयाल गुप्ता जी
प्रधान

श्री उदय सरकार जी
मन्त्री

श्री आशीष मंडल जी
कोषाध्यक्ष

प्रथम पृष्ठ का शेष

विराट विद्यालय का निर्माण कार्य भी गतिशील है। ये तमाम विद्यालय और छात्रावास आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य की नीव हैं। आप सोचिए जहां आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का नामों निशान नहीं था, वहां पर दयानंद सेवा श्रमसंघ के द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों, विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे अब संध्या और यज्ञ के मंत्रों के उच्चारण के साथ साथ आर्य समाज के भजन और वैदिक धर्म पर आधारित प्रेरक नाटिकाओं का मंचन करते हैं। शिक्षा सेवा के इस अभियान में अभी और बहुत सा कार्य बाकी है। किंतु दयानंद सेवा श्रमसंघ का संकल्प है कि हम मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण को नित निरंतर आगे बढ़ाएंगे और महर्षि दयानंद का सपना कृण्वन्तो विश्वमार्यम को साकार करेंगे।

म. प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में निर्मित हो रहे हैं - वैदिक धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों के संरक्षण एवं सम्वर्धन के विशाल केन्द्र

बामनिया, जिला झाबुआ (म.प्र.) में गतिशील महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के छात्रों के लिए तीन मंजिला छात्रावास का नव निर्माण।

भामल, जिला झाबुआ (म.प्र.) के प्रांगण में महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के तीन मंजिला भवन का निर्माण कार्य जोरों पर।

प्रथम पृष्ठ का शेष

व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शुद्रों को भी अपने उत्थान के लिए

स्वाध्याय करना ही चाहिए।

अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखाई देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर कोई उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरन्तर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है। समुद्र के किनारे पर जो रेत का अंबार होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। नित निरंतर कुछ-न-कुछ नया और उपयोगी ज्ञान ध ाारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

स्वाध्याय की महिमा

शरीर की उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशलता और महानता आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे है और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं। इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान किया जाता है-

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पायें चढ़ें, नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहे, ऋजुपंथ गहें,
परिवार कहे, वसुधा भर को।।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें निज जीवन को।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमंडल को।।

श्रावणी पर्व के आयोजन

बंधुओं, वर्ष 2019 में 73वें स्वाधीनता दिवस पर ही रक्षाबंधन के पर्व का संयोग है। इसके उपरांत 24 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व है।

इन दोनों पर्वो के बीच की अवधि को श्रावणी पर्व अर्थात् वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाएं।

वेद प्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। यदि वेद प्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गंगा घर-घर में पहुंचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन होना चाहिए।

वेद प्रचार समारोह को सफल बनाने हेतु अपनी सुविधा अनुसार निम्न उपायों में से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते हैं-

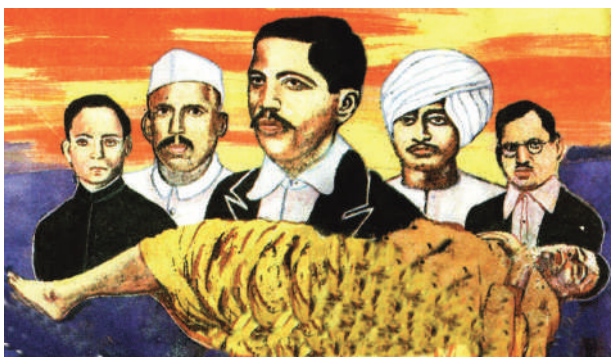

1. बृहद यज्ञों का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) करें जिसमें आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त, जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

2. यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन-सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

3. अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशालाएं आयोजित करें। ***'सुखी परिवार कैसे रहें?'*** विषय पर यदि गोष्ठियां आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

4. वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथाओं का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों का लाभ लोगों के धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सकें।

5. क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। **इस हेतु सभा से 'एक निमन्त्रण', आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश' उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।**

6. आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके 'आत्मावलोकन' अवश्य करें कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधियां सन्तोषजनक हैं? क्या उससे और अधिक कुछ सुधार किया जा सकता है? यदि नहीं, तो उसके कारण और समाधानों पर चर्चा करें।

7. उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजें जिससे अन्य आर्य समाजों के सदस्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

8. आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद प्रचार समारोह की तिथियां निश्चित करलें और संगीतकारों, भजनोपदेशकों तथा वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करें।

9. आर्यसमाज के अधिकारियों से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी **14 अगस्त** को **हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस विजय दिवस** के रूप में धूमधाम से मनाएं। श्रावणी उपाकर्म, एवं सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन का विशेष रूप से आयोजन करें।

अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ '**आर्य सन्देश**' में अवश्य भेजें।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

Bhagwad Gita Appeal is Universal

- Brigadier Chitranjan Sawant

Maharishi Dayanand has lauded the teachings and persona of Yogeshwar Shri Krishna in his magnum opus, Satyarth Prakash. There cannot be two opinions about the role of Shri Krishna in motivating one and all to do one's duty with determination without yearning for a reward. Even the most disheartened individual is encouraged by teachings of the Gita to gird up loin and enter the arena of action. Karma is the bottom line of this teaching and Ma Phaleshu Kadachan is the advice given for all for ever – crave not for a reward or prize for what one has done as one's duty. It may be summarized thus: Do Thy Duty, Reward is Not Thy Concern.

What brought me to the philosophy of Karma and Karmaphal is a telecast of an interview with a 15-year old girl, Alia Khan of Meerut by Gaurav Sawant on the India Today channel this evening where the teenager recited shlokas of Bhagvad Gita for which she had been given an award by Yogi Aditya Nath, Chief Minister of Uttar Pradesh in the presence of Rajyapal Shri Ram Naik and Chief Minister of Maharashtra, Shri Devendra Phadnavis. What made the event news worthy was a threat by some nitwit Maulana of a Seminary that a Fatwa would be issued against the Muslim girl for being Hindu Dharma oriented. On being asked by the anchor whether she was frightened by a Fatwa, Alia Khan boldly replied in the negative and quoted Shri Krishna again on doing one's duty without fear or favour.

Teenager Alia Khan has the full support of her parents in reading and reciting shlokas of the Bhagwad Gita. After all she was encouraged by her school to participate in the recitation competition of Shlokas where she distinguished herself and developed faith in the holy book as a source of inspiration. The anchor buttressed the point by bringing in the Kargil War of 1999 against Pakistan where in the Indian troops drew inspiration from the teachings of Shri Krishna. He quoted the shloka:

Hato wa prapsyasi
Swargam, Jitva wa
Bhokshyase Maheem.
Tasmad uttishth Kaunteya,
Yudhai Krit Nishchayah.

It is the determination that matters when a difficult job is undertaken and that indeed would lead to victory. One surely succeeds when one moves forward with Determination to achieve the goal.

In the event on the small screen Alia Khan moved to recite the Gita Shlokas with Determination and carried the day. India Today news channel aired the show with determination irrespective of a proposed Fatwa against the teenager. It was the teaching of the Gita that brought positive result wherein Determination of all concerned played a magnificent part.

The 701 shlokas spread over 18 chapters of the Bhagwad Gita is the finest example of Psychotherapy that man has known so far in the present age. Imagine commander-in-chief of an army going into depression just before the start of the main battle and refusing to wage war against own kith and kin to achieve victory, wealth, name and fame on vanquishing the opponents. Arjuna sat on the ground, leaving aside his bamed bow, Gandiva, going into a bout of Inaction, is a case of vishad or extreme sorrow numbing all senses. Yogeshwar Shri Krishna, his charioteer, could have left Arjuna to his fate and retreated hundreds of miles to his capital, Dwarka. No, he did not do so as that would have amounted to running away from the problem of Inaction and retreating into the oblivion of a distant land. Shri Krishna, chose to stay on in the midst of battlefield and cure his friend, Arjuna of his mental malady, depression turning into inaction or inertia.

Shri Krishna applied the potion of counseling rendering friendly guidance until Arjuna picked up his bow, Gandiva, and was ready both mentally and physically to Fight to Finish for the right cause. Killing or getting killed is a part of the game of battle fought to uphold Dharma. Shri Krishna's psychotherapy was successful, his friend Arjuna fought the battles in the war of Mahabharat until he was victorious.

While one sinks into depression for one reason or the other, one needs a friend's shoulder to keep his sick mind upon to cry out until the sagacious friend counsels him sympathetically until he is restored to perfect mental health. Shri Krishna and Arjuna shine a perfect example of the depression cured to perfection, Inaction converted into Action and near Defeat turned into Victory.

Maharishi Dayanand was indeed impressed with Yogeshwar Shri Krishna. He says so in his treatise, Satyarth Prakash, translated into English from Hindi by Pundit Ganga Prasad Upadhyay, and I quote:

"The history of Krishna as given in the Mahabharat is all glorious. His qualifications, actions and temperament are all such as become a great man. From the very birth unto the death there is not a single action attributed to Krishna in the Mahabharat which might be called condemnable. But the Bhagvata has ascribed many evil things to him. The theft of milk, butter and curd and butter, sexual relations with the maid servant Kubja, association with the wives of others, sexual indulgences etc etc, have all been falsely attributed to Krishna. "

The teachings of Shri Krishna in the Bhagvad Gita are for the good of entire Mankind; all men, women and adolescents irrespective of race, region or religion. The appeal of Bhagwad Gita is indeed Universal.

aumchitranjansawant@gmail.com
Mob. 9811173590

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे – अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों से दूर आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार विमर्श कर आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

पृष्ठ 4 का शेष

कारण थे। एक तो यह कि अगर इस गर्दभ महाराज ने ढेंचू-ढेंचू करते हुए पूरी स्पीड पकड़ ली तो अपनी रक्षा कैसे करूंगा। इसके तो ब्रेक भी नहीं होते कि उन्हें ही दबा दूँ। हालांकि धोबी ने उसके गले में बंधी रस्सी पकड़ रखी थी। पर वह गधे की किसी उछल-कूद को रोकने के लिए बेकार में पंगा क्यों लेगा। उसने तो एक हजार रुपये एडवांस में ले रखे हैं। उसे यह भी पता है कि सवारी को कहीं लुढ़का कर गधा घंटे-आध घंटे में खुद धोबी घाट पर पहुँच जाएगा।

कहते हैं कि किस्मत खराब हो तो ऊँट पर बैठे आदमी को भी कुत्ता काट जाता है। मेरे साथ भी यही हुआ। एक किलो मीटर की मेरी गर्दभ-यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होने ही वाली थी कि हाथ में थैला लटकाए मेरे मोहल्ले की एक आकृति सामने से आती दिखाई दी। वह जितना निकट आ रहा था मेरी तरफ उतना ही ज्यादा घूर रहा था। मेरे पाँवों के नीचे से तो मानो जमीन, नहीं-नहीं, गधा ही खिसक गया। मैंने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया लेकिन वह दुष्ट आकृति मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और बोली भाई जी ये क्या हो रहा है? मैंने कहा, फिर बताऊंगा कुछ गंभीर बात है। किसी से जिक्र मत करना। मेरे बिना पूछे ही यह सूचना देता हुआ वह चला गया कि यहाँ यमुना के रेत में साग-सब्जियाँ बहुत अच्छी होती हैं, जब भी कभी यहाँ से गुजरता हूँ तो पुल के पास स्कूटर खड़ा करके यहाँ से ताजा सब्जियाँ जरूर लेके जाता हूँ।

मैंने अपनी खीझ धोबी पर उतारते हुए कहा : तुम्हें इस तरह बीच में रुकने की क्या जरूरत थी। मेरी तरफ व्यंग्य से देखते हुए धोबी ने गधा आगे बढ़ा दिया और कुछ ही मिनट के बाद मेरा एक किलो मीटर लम्बी गध-सवारी का अनुष्ठान पूरा हो गया।

हालांकि मैंने पड़ौसी को हिदायत दे दी थी कि वह इस घटना का किसी से जिक्र न करे। लकिन, इसके बावजूद मुझे पूरा भरोसा था कि मेरे घर पहुँचने से पहले वह मेरी गध-सवारी का रंगा-रंग कार्यक्रम पेश कर चुका होगा। मैं चलते-चलते बाबा से प्रार्थना कर रहा था कि हे बाबा अगर तुझमें शक्ति है तो इस पड़ौसी को, मेरे घर पहुँचने से पहले ही सपरिवार स्वर्ग में पहुँचा दे। लेकिन प्रार्थनाएँ इतनी जल्दी कहाँ सुनी जाती हैं! जैसा कि होना था एक दो-दिन में यह घटना पूरे मोहल्ले में वायरल हो गई। लोग एक-दूसरे को इसका संदेश भेजकर पूरे मजे ले रहे थे। मैं चुप रहा और मन-ही-मन बाबा से प्रार्थना करता रहा कि तू जल्दी से 'किरपा बरसवा दे'। उसके बाद इन सबको गधे पर नहीं बिठवा दिया तो मेरा नाम भी पूर्ण सिंह नहीं।

मैं बड़ी बेसब्री से किरपा बरसने का इंतजार करता रहा। दस-पंद्रह दिन बीत गए किरपा की बरसात के बादल दिखाई नहीं दिए। मुझे बाबा पर गुस्सा आ रहा था। मैं फिर से उसके पास पहुँच गया और कहा : - बाबा गध-सवारी को काफी दिन हो गए लेकिन किरपा तो अभी तक नहीं बरसी।

- गधे की सवारी कहाँ पर की थी?

- अपवित्र हो चुकी पवित्र यमुना नदी के किनारे।

- शादी के समय घुड़चढ़ी कहाँ से शुरू की थी?

- घर से।

- घर में दुलहन आई थी या नहीं।

- जी! आई थी।

- मूर्ख जहाँ से गध-सवारी शुरू करेगा किरपा भी तो वहीं बरसेगी। वह जमना के किनारे बरस गई। जा घर से शुरू कर, फिर देखना घर पर बरसेगी। मैं चुपचाप वापस आ गया और तय किया कि बिना 'किरपा' के ही, जीवन बिताऊँगा।

- एम-93, साकेत, नई दिल्ली-17
मो॰ 9818211771

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

सरकारी/ गैर सरकारी/ निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्राओं जो अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों। इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज शकरपुर
दिल्ली-110092

प्रधान : श्री ओम प्रकाश रुहिल
मन्त्री : श्री राकेश शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री पंकज शर्मा

आर्यसमाज इन्द्र पुरी
नई दिल्ली-110012

प्रधान : श्री नरेश चन्द्र वर्मा
मन्त्री : श्री टी. आर. दयाल
कोषाध्यक्ष : श्री राजकुमार चांदना

आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प
हडसन लेन, जी.टी.बी. नगर दिल्ली-9

प्रधान : श्री सुरेन्द्र पाल
मन्त्री : श्री दविन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष : श्रीमती सुरेश अरोड़ा

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
- सम्पादक

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ★ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ★ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ★ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

वधू चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि 12/01/1992, कद - 5 फुट 5 इंच, शिक्षा - B.Tech. (Com. Sc.) NIT Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क करें-

9412865775, 9412135060

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

शोक समाचार

श्रीमती रेणु मल्होत्रा का निधन

एम.डी.एच. परिवार के सदस्य श्री राजेन्द्र जी की पूज्य सासूमां श्रीमती रेणु मल्होत्रा जी का 10 जुलाई, 2019 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 जुलाई, 2019 को सनातन धर्म मन्दिर मानसोवर पार्क में सम्पन्न हुई, जिसमें एम.डी.एच. परिवार, आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जुलाई, 2019 से रविवार 21 जुलाई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18-19 जुलाई, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 जुलाई, 2019

प्रतिष्ठा में,

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

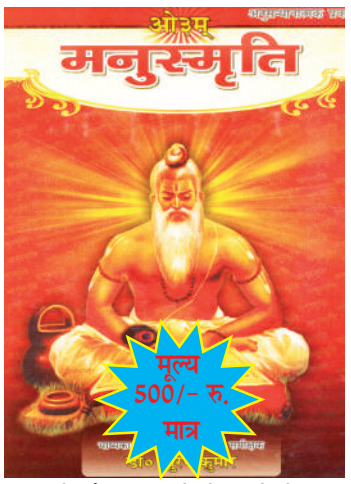

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600/-~~ 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

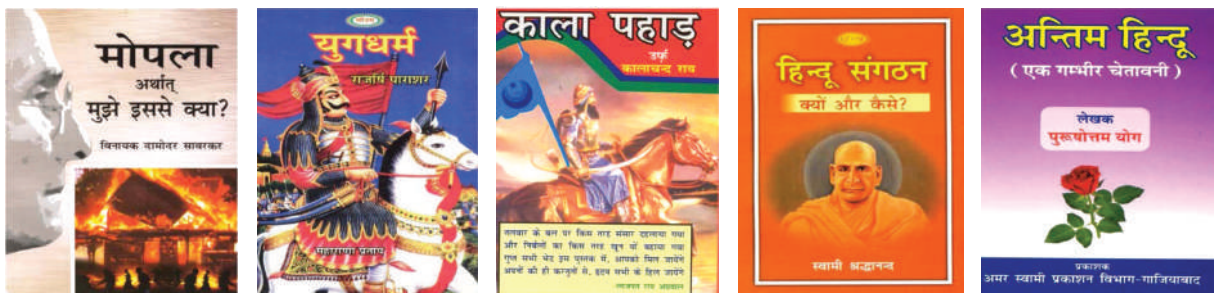

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

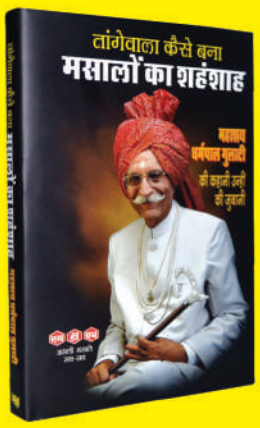

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।

आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

MDH असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह